ओ३म्

सार्थक जीवन के प्रतीक

(साहित्य-संस्कृति-समाज एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित
कीर्तिशेष : डॉ. प्रशान्त वेदालंकार
के प्रति श्रद्धा-सुमनांजलि)

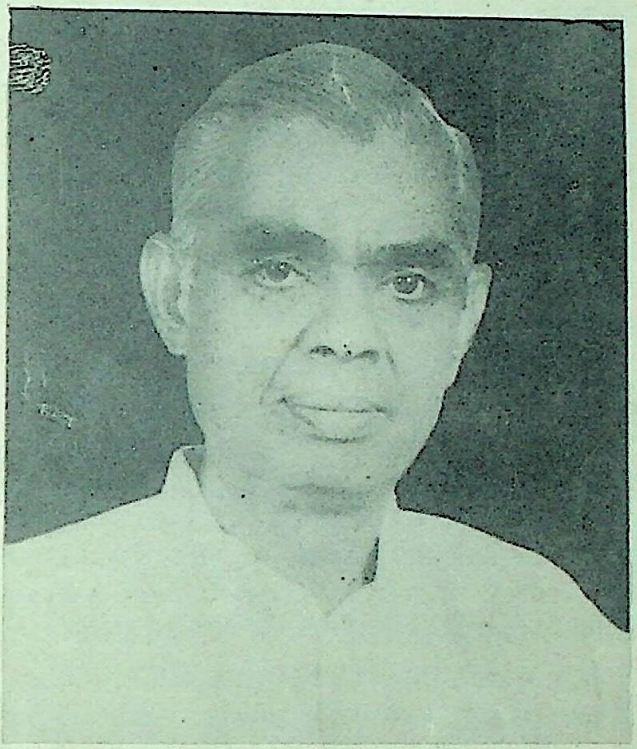

"साहाय्यमन्यस्य निजप्रकर्षः"

(पर-सेवा ही धर्म महान,
निहित इसी में आत्मोत्थान।)

मृत्योर्माऽमृतं गमय

वैदिक संस्कृति में इस शरीर की अनिवार्यता व महत्व को स्वीकार किया गया है। इसे देवताओं की पुरी अयोध्या कहा है कालिदास ने 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' कहकर बताया है कि संसार का कोई भी छोटा या बड़ा कार्य शरीर के बिना नहीं हो सकता। इसमें शरीर की रक्षा पर बल दिया गया है 'गीता' में 'वासांसि जीर्णानि यथा विहाय..' आदि श्लोक द्वारा जर्जर शरीर को छोड़ देने की बात कही गयी है। परन्तु जो जीर्ण होने से पहले ही छिन जाय, उसकी वेदना कैसे सही जाय ?

संस्कृत के नाटककार भास का कथन है—आगमसधानानि सुलभपर्यवस्थायिनि भवन्ति (स्वप्नवासवदत्तम्) अर्थात् शास्त्र श्रुतव्यक्ति मृत्यु के शोक के पश्चात् स्वाभाविक स्थिति को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। वे मृत्यु के दंश को सहकर निरन्तर शक्ति उत्पन्न करते हैं।

महर्षि दयानन्द ने 'भस्मान्तं शरीरम्' आदि यजुर्वेद के मन्त्र के प्रमाण से स्पष्ट किया है कि दाहकर्म और अस्थिसंचयन से पृथक् मृतक के लिए दूसरा कोई भी कर्म शेष नहीं है। हां, यदि यह सम्पन्न हो, तो अपने जीते या मरे पीछे उसके सम्बन्धी वेदोक्त धर्म का प्रचार, अनाथपालन, वेदोक्त धर्मोपदेश की प्रवृत्ति के लिये चाहे जितना धन प्रदान करें, बहुत अच्छी बात है।

अथर्ववेद १०-८-४७ में कहा है 'तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योः—' अर्थात् मनुष्य परमात्मा को जानकर मृत्यु से भी नहीं डरता। यजुर्वेद के मृत्युंजय मन्त्र से मृत्यु पर विजय पर विजय प्राप्त की जा सकती है—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिवबन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

इस मन्त्र में त्र्यम्बक का अर्थ पृथ्वी, अग्नि, जल है। सुगन्धि वाहन वायु है, पुष्टि बढ़ाने वाला आकाश तत्त्व है। उर्वारुक इन पंचतत्त्वों से बनने वाली कोई भी कृति है। वह शरीर भी हो सकती है। प्रार्थी प्रस्तुत मन्त्र में प्रार्थना कर रहा है कि जिस प्रकार उर्वारुक (खरबूजा) पक कर बन्धन से छूट जाता है उसी प्रकार हे परमात्मन्! तू मुझे मृत्युरूपी बन्धन से मुक्त कर, पर अमृतत्त्व से नहीं। मृत्यु में मृत् शब्द मिट्टी अथवा अज्ञान का वाचक है। मन्त्र में कहा गया है कि हमें अज्ञान व मोह आदि से मुक्त करो पर अमृतत्त्व अर्थात् ज्ञान से कभी विमुख न करो।

मृत्यु को यम भी इसीलिए कहा गया है कि वह हमारा आचार्य बनकर अज्ञान को दूर करने व ज्ञान के मार्ग पर चलाने में समर्थ होता है। कठोपनिषद् में यम ने भी नचिकेता को प्रेय मार्ग से हटाकर श्रेय मार्ग की ओर प्रवृत्त किया और तृणाचिकेत अग्नि को दिया। तृणाचिकेत अग्नि ने उसे परमात्मा का ज्ञान कराया।

हमें विश्वास है कि इस पुस्तिका से प्रत्येक पाठक अपने जीवन को यज्ञमय बनाने की प्रेरणा प्राप्त कर अमृतत्त्व को प्राप्त होगा।

—डॉ. सरोज दीक्षा

सरल यज्ञ-विधि

प्रार्थना के मंत्र

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥१॥
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते-जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥ ७ ॥
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नमऽक्तिं विधेम ॥ ८ ॥

आचमन-मंत्र

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।
ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।
ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।

अङ्गस्पर्श-मंत्र

ओ३म् वाङ्म आस्येऽस्तु। (मुख)
ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु।(नासिका)
ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। (आंखें)

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु । (कान)
ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु । (बाहु)
ओ३म् ऊर्वोमे ओजोऽस्तु । (जंघा)
ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु । (संपूर्ण शरीर)

अग्नि प्रज्ज्वलित करने के मंत्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः ।
ओ३म् भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥
ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँसृजेथामयं च ।
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥
(अगले मंत्रों से तीन समिधाएं घी में डुबोकर अग्नि को अर्पित करें ।)
ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे इदं न मम ॥ (इस मंत्र से पहली समिधा)
ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयातातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥
ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे, इदन्न मम ॥ (इन दोनों मंत्रों से दूसरी समिधा)
ओ३म् तन्त्वा समिद्भरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा ॥ इदमग्नयेऽङ्गिरसे, इदं न मम ॥ ४ ॥ (इस मंत्र से तीसरी समिधा)
अगले मंत्र को पांच बार पढ़कर घी की आहुतियां दें ।
ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्द्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा । इदमग्नये जातवेदसे, इदं न मम ॥
अंगले मंत्रों से वेदों की विभिन्न दिशाओं में जल छिड़कें ।
ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व । (पूर्व दिशा)
ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व । (पश्चिम दिशा)
ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व । (उत्तर दिशा)

ओ३म् देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ (वेदी के चारों ओर)

अगले आठ मंत्रों से घी की आहुतियां दें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये, इदं न मम॥

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम्॥

ओ३म् प्रजापतंये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम॥

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय, इदं न मम॥

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम॥

ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा, इदं वायवे, इदं न मम॥

ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय, इदं न मम॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः, इदं न मम॥

अगले सभी मंत्रों से घी के साथ सामग्री की भी आहुतियां दें।

ओ३म् सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। (प्रातःकालीन चार आहुतियां)

ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।

ओ३म् ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा।

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। (सायंकालीन चार आहुतियां)

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। (मौन आहुति)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय, इदं न मम॥

ओ३म् भूववार्यवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय, इदं न मम॥

ओम् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय, इदं न मम॥

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादितेभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः इदं न मम॥

ओ३म् आपो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते॥

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यदं भद्रं तन्न आ सुव, स्वाहा ॥
ओ३म् अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा ॥
गायत्री मंत्र से तीन आहुतियां दें।
ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
अगले मंत्र से तीन बार पूर्णाहुति दें।
ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।
शान्ति पाठ
ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वँ शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः। सामा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

यज्ञरूप प्रभो हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए।
वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें।
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें।
भावना मिट जाएं मन से पाप अत्याचार की ।
कामनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नार की।
लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए।
स्वार्थभाव मिटे हमारा प्रेमपथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।
प्रेम रस से तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा आपकी सब पर रहे।

श्रद्धांजलियाँ

श्री वीरेशप्रताप जी चौधरी (अध्यक्ष, जनता दल, दिल्ली प्रदेश)

प्रशान्त जी में हमने एक ऐसे व्यक्तित्व को खो दिया जिसकी भरपाई आसान नहीं।... प्रशान्त जी से हमें बहुत आशाएं थीं। अभी कुछ दिन पहले उनसे चर्चा हो रही थी कि आर्यसमाज के लिए एक बड़ा सम्मेलन करना है, आर्यसमाज की दिशा क्या हो इसके बारे में विचार करना है, आज के संदर्भ में बड़ा आवश्यक है। प्रशान्त जी में अनेक गुण थे। जहां वे राजनीति से जुड़े वहीं धार्मिक जीवन में, सामाजिक पक्ष में, सभी कार्यों में उनकी रुचि रहती थी। राजनीति में मैंनें प्रायः देखा है कि मृदुभाषी बने रहना बड़ा कठिन होता है। प्रशान्त जी का एक विशेष गुण यह था कि कितनी भी उत्तेजना क्यों न हो, किसी भी प्रकार का प्रहार उन पर क्यों न किया जाए वह हंसकर उसको झेल लेते थे। कभी भी तेज़ी से बात करना उनके स्वाभाव में नहीं था। लेकिन साथ-साथ वह अपनी बात को बड़े सटीक बड़े स्पष्ट ढंग से रखते थे और झिझकते नहीं थे। यद्यपि वे भारतीय जनता पार्टी के बड़े कर्मठ कार्यकर्ता थे, एक नेता थे, लेकिन ये दलगत राजनीति से ऊपर उठकर सोचना चाहते थे कि देश के लिए, समाज के लिए क्या किया जाए। जिस प्रकार के गुण उनमें थे उन गुणों को हम अपने जीवन में उतार सकें और जो रास्ता उन्होंने चुना धर्म का, सच्चाई का, उस रास्ते पर चल सकें, मैं समझता हूं यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्री जयकरण कपूर (प्राचार्य हंसराज कालिज)

प्रशान्त जी अब हमारे बीच नहीं रहे। वह बहुमुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। साहित्य का क्षेत्र हो, चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो या फिर समाज सेवा का क्षेत्र हो, जिस काम को भी उन्होंने अपनाया, बड़ी शालीनता से उसको निभाया।

डॉ० श्यामसिंह 'शशि' (निदेशक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार)

मेरे अन्तःकरण में उस महामानव, सुप्रसिद्ध साहित्यकार और सुहृदय मित्र की स्मृति अमिट रूप से अंकित है। वे केवल हिन्दी के लेखक और संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने बहुत कुछ देखा था और आधुनिक दृष्टि उनके पास थी। मैं समझता हूं वे मरे नहीं, वह तो भौतिक रूप से ही गये हैं। आत्मिक रूप से आज भी हमारे साथ हैं।

श्री चरतीलाल गोयल (अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा)

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार में एक सच्चे इंसान के असंख्य गुण थे। वे एक सच्चे राष्ट्र भक्त, कर्मठ समाजसेवी और हिन्दी के अनन्य प्रेमी थे। जो भी उनके निकट आया, वह कभी उनसे निराश होकर नहीं गया। वे सदा बड़ी सीधी-सादी, सात्विक और प्रसन्न मुद्रा में सबसे मिलते थे। ऐसे मानव बहुत कम हमारे समाज के रोजमर्रा के काम में दीख पड़ते हैं। उनकी मृत्यु बहुत बड़ी हानि है, हमारे देश और समाज ।...हमारी सारी पार्टी तो उन जैसे वरिष्ठ, निष्ठावान, देशभक्त कार्यकर्ता को पाकर निश्चिन्त थी, किन्तु विधि का विधान कौन टाले।

श्री जयपाल विद्यालंकार (स्नातक, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार का जो बहुआयामी व्यक्तित्व था, उसके पीछे गुरुकुल कांगड़ी की शिक्षा दीक्षा थी, जिसका बहुत महत्व था। बात चाहे हिन्दी की हो, संस्कृत की या आर्यसमाज की, भले ही वे किसी बात के कहने में अकेले पड़ जाएं, परन्तु, वे उससे पीछे नहीं हटते थे। उसे लगातार किसी बिन्दु तक पहुंचाने का पूरा प्रयत्न करते थे। उसमें अपने सहयोगियों को, मुझे, बाकी सब साथियों को अपने साथ लेते थे।

श्री राजेन्द्र गुप्त (विधायक, भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली)

वे हरेक का दिल जीतने वाले थे, मन को मोहने वाले थे। आज वे नहीं रहे, लेकिन उनकी याद हमेशा हमारे दिलों में रहेगी। जो कुछ भी हमने उनसे सीखा है उसे हम ग्रहण करने की कोशिश करेंगे।

श्री मांगेराम आर्य

डॉ. प्रशान्त का जाना एक सामान्य घटना नहीं है। यह साहित्य जगत पर, आर्यजगत पर वज्रपात हुआ है। डॉ. प्रशान्त, जैसा उनका नाम है, ऐसे प्रशान्त महासागर की तरह वे गम्भीर और शान्त स्वभाव वाले थे। वे अत्यन्त निरहंकार और राष्ट्र भक्त थे। आर्यजगत और साहित्य जगत् का कोई कोना ऐसा शेष नहीं है, जहां प्रशान्त जी का नाम नहीं पहुंचा हो। मैं आर्यजगत और साहित्य जगत से प्रार्थना कर रहा हूं कि यदि सचमुच उनको श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो उनके द्वारा स्थापित बुद्धिजीवी सम्मेलन को "डॉ. प्रशान्त वेदालंकार स्मृति-बुद्धिजीवी-सम्मेलन" नाम से एक स्थायी संस्था का रूप दीजिए। चार या पांच वर्ष बाद संस्था का सम्मेलन हो, और सम्मेलन के साथ उनका नाम सदैव जुड़ा रहे। उन्होंने जिस भावना से इस संस्था को स्थापित किया था, वह भावना युगों-युगों तक चलती रहे।

प्रिंसिपल ज्ञानचन्द चोपड़ा (अध्यक्ष, डी.ए.वी. कालेज प्रबन्ध-समिति)

ज़ेन फकीर कहते हैं—नदी में से आप गुज़रो, तो ऐसे कि पानी आपको छू न जाए। जैसे कमल का फूल जल में रहता है, और जल से अछूता। मैंने इसी तरह डॉ. प्रशान्तकुमार को अपना जीवन व्यतीत करते देखा। गर्मी हो या सर्दी, नर्मी हो या सख्ती, जैसे भी हालात सामने आए, उन्होंने स्वीकार किया। उनके सामने अपना सिर झुकाया। यह परमात्मा का उनको बड़ा वरदान था।...प्रशान्त जी का स्वभाव भी बहुत शान्त था। मैंने देखा कि उन्हें गुस्सा बहुत कम आता था। गुस्सा आता भी था तो फौरन दूर हो जाता। आपने देखा है कि चकमक का पत्थर थोड़ा सा रगड़ो तो चिंगारी दे जाता है लेकिन उसी वक्त वह ठंडा हो जाता है। मैंने बहुत वर्ष इनके साथ कालेज में काम किया, जो लोग उन्हें भली-भांति जानते हैं वे यह भी जानते हैं कि उनका हिन्दी और संस्कृत के साथ कितना लगाव था और उन्होंने इन भाषाओं के लिए क्या-क्या प्रयत्न किए। मैंने यह भी पाया कि उनके भीतर अपने विद्यार्थियों के लिए हर वक्त दिया जलता था। दरवाजे हर वक्त उनके लिए खुले रहते, अपने पास से उन्हें किताबें, पैसे

तक दिया करते थे। देश की उन्नति के परिप्रेक्ष्य में उनकी देशभक्ति की सीमा हो नहीं की। आपको विदित ही होगा कि इमरजैंसी के दिनों उन्हें जेल की यात्रा करनी पड़ी। कितने ही महीने वे जेल में रहे। दर्शन शास्त्री की भांति उस जेल को ही नहीं, देह को भी उन्होंने अपना एक घर समझा। ऐसा इसलिये कि वे मानते थे कि यह एक विश्रामशाला है, कुछ देर के लिए यहां रहना है। और फिर असली घर तो परमात्मा का है।

डॉ. एन. के. ओबराय
(डायरेक्टर : सेंटर फॉर प्रोफेशनल डेवलपमैंट इन हायर एजूकेशन)

प्रशान्त जी के बारे में जो उनका योगदान कालेज में था या राजनीति में अथवा और संस्थाओं में, इसके अतिरिक्त एक और पहलू जो शायद किसी को नहीं मालूम, मैं उसे आपको बताऊंगा। कुछ साल पहले प्रशान्त जी को एक लगन थी कि हिन्दी भाषा की चर्चा काफी रहे खासकर हमारी यूनिवर्सिटी में। उन्होंने विश्वविद्यालय हिन्दी परिषद् बनाई। विजयेन्द्र स्नातक जी को प्रधान बनाया, खुद वे सचिव थे। मुझे कहने लगे, आप उप-प्रधान बन जाओ। वह संस्था अभी चल रही है। हर साल उसके दो कार्यक्रम होते हैं। प्रशान्त जी की इच्छा थी कि वह संस्था चलती रहे। मेरे ख्याल से सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि वह संस्था आगे चलती रहे।

डॉ. महेन्द्र कुमार (प्राचार्य, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. प्रशान्त कुमार से मेरे पिछले ३२-३३ वर्षों से सम्बन्ध थे। आरम्भ में वे मेरे पास विद्यार्थी के रूप में आए थे। उस समय मेरी उम्र और उनकी उम्र में बहुत अधिक अन्तर नहीं था। वे मेरी देख-रेख में पी-एच.डी. के लिए शोध-कार्य कर रहे थे। जब भी विचार में वैमत्य होता था वे बड़ी ही सहजता से अपनी बात को कहते थे। मैं जो कहता था उसको सुनते थे और बाद में जो उचित होता था तो उसे स्वीकार करते थे। इसीलिए मुझे उनकी प्रकृति बहुत ही प्रिय थी। आज वे नहीं रहे, मुझे व्यक्तिगत क्षति महसूस हो रही है।

एस.एस.सिंह (फादर चर्च, सब्जी मण्डी)

मैं केवल एक ही बात कहूंगा। हम सबको मालूम है कि जब जीवन के आखिरी सफर में होते हैं, चाहे श्मशानघाट हो, चाहे कब्रस्तान हो, वहां पर जो लोग काम करते हैं, केयर टेकर होते हैं। उनके लिए आम जीवन का एक रूटीन है। बहुत कम लोग होंगे जिनका दिल पसीजता होगा। पर किसी ने कहा है—'जब वह इस दुनिया से आये—तो आखिरी इंसान जो कि वहां पर इस इन्तज़ाम में होते हैं चाहे वह शमशान घाट हो, उसके भी आंख में आंसू आ जाए। और यह कब होता है, जब कोई बात किसी को छूती है। प्रशान्त जी का जीवन ऐसा था जो हरेक के जीवन को छूता था। किसी भी क्षेत्र में उनसे बात करें, सब के जीवन को उन्होंने अपने जीवन से छुआ। हम धन्यवाद देते हैं ऐसी आत्मा के लिए, ऐसे जीवन के लिए दुनिया में आया अपने काम को पूरा करके चला गया।

श्रीमती शकुन्तला आर्य (प्रधानामहिला सभा, दिल्ली)

मेरे वह बहुत ही प्रिय भाई कहिये, साथी कहिये, सहयोगी कहिए, हर क्षेत्र में—बुद्धिजीवी क्षेत्र में, आर्यसमाजी क्षेत्र में और भारतीय जनता पार्टी के क्षेत्र में, हर क्षेत्र में हम कंधे से कंधा मिलाकर चला करते थे और सम्भवतः मुझे याद है मैंने जब जनवरी का उनको ग्रीटिंग भेजा तो उन्होंने मुझे उत्तर में लिखा, कि बहन जी, क्या ही अच्छा होता अगर आपने विक्रमी सम्वत् बधाई पत्र दिया होता। उन्होंने बहुत ही प्यार भरे शब्दों में मेरा धन्यवाद किया।

श्रीमती शशि चान्दला (हंसराज माडल स्कूल)

'सामान सौ वर्ष का, पल की खबर नहीं।' मैं प्रशान्त जी से एक दिन अर्थ पूछ रही थी, कि एक जगह उर्दू में लिखा हुआ था 'ऐसा नहीं कि मुझे पता नहीं था लेकिन कई लोग ऐसे होते हैं जिनसे अर्थ पता होते हुए भी कुछ और अर्थ पता करने को मन चाहे। ऐसे सौम्य, सरल, आडम्बरमुक्त चकाचौंध से दूर, एक ऐसा व्यक्तित्व कि जिनके जैसी मौत पाने को मन करे, लोग इस तरह याद करें, कि शब्द कम पड़ें और सारे के सारे शब्द जितनी भी उपमाएं लगाएं, लगें कि हमने कुछ नहीं कहा उनके बारे में_।

श्री केदारनाथ जी साहनी (राष्ट्रीय सचिव, भारतीय जनता पार्टी)

मेरा दिल अब भी यह स्वीकार करने को तैयार नहीं है कि डॉ. प्रशान्त जी हमारे बीच नहीं रहे। मैंने अनेक लोग देखें होंगे, जो इतने सरल हों, इतने मृदु हों, इतने विद्वान हों, इतने संवेदनशील हों। राजनीति में इस प्रवृत्ति का व्यक्ति मिलना दुर्लभ है। मनसा, वाचा, कर्मणा, इस देश की संस्कृति के साथ जुड़ा हुआ, डॉ. प्रशान्त का व्यक्तित्व था। वे निश्चल, निष्कपट और स्पष्टवादी थे।_आज के युग में इस तरह के लोग बहुत कम मिलते हैं। उनमें से यदि कोई चला जाए तो उसकी जगह को कौन पूरा करेगा, यह समझ में आना मुश्किल है। आज व्यक्ति स्वयं पर केन्द्रित है या सबसे पहले परिवार की सोच लेता है, समाज का और देश का सोचने वाला व्यक्ति विरला होता है। वास्तविकता यह है कि इसी तरह से समाज जिन्दा रहता है।

डॉ. धर्मपाल (कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी)

भाई प्रशान्त कुमार गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य मेधावी स्नातक थे। उनके पिताजी ने आजीवन गुरुकुल कांगड़ी के लिए काम किया। उन्होंने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदर्शों के अनुरूप दिल्ली में रहते हुए निरन्तर आर्यसमाज की पताका को, वैदिक धर्म की पताका को ऊंचे उठाये रखा। चाहे वे राजनीति के क्षेत्र में रहे हों, या शिक्षा के क्षेत्र में सर्वत्र उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों को अपना मूल आदर्श माना।

डॉ. सत्यदेव चौधरी (सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं काव्यशास्त्र मर्मज्ञ)

विद्या का वह व्यसनी व्यक्ति मेरी निगाह में घर कर गया था। तब से आज तक, उनकी मृत्यु पर्यन्त तक मैंने देखा, अध्यापन करते हुए देखा, सभाओं में, सोसाइटियों में काम करते

हुए देखा, लोगों के मित्र के रूप में काम करते हुए देखा, वह व्यक्ति किसका नहीं था? प्रह्लादकुमार की मृत्यु के उपरान्त उन्हीं के दम खम से प्रह्लाद कुमार समिति चली। लगातार पिछले अनेक वर्षों से (लगभग १५ वर्ष से) चार-चार विद्वान उस स्मारक समिति में बोलने के लिए एक विषय वैदिक विषय पर बोलने के लिए आते रहे।...मित्रो वह सब का प्यारा इंसान चला गया। जहां वालों ने जब तेरे प्यार की इन्तहा कर दी, उठाकर ले गए तुमको, यहां से उस जहां वाले।'

श्री कुलानन्द भारतीय (पूर्व कार्यकारी पार्षद, दिल्ली महानगर परिषद्)

प्रशान्त वेदालंकार उन व्यक्तियों में से एक थे, जो लाखों में से ढूंढने पर भी नहीं मिलते। हंसमुख, मिलनसार, योग्य व्यकित का समाज से चले जाना, समाज की वहुत बड़ी क्षति है। ऐसे व्यक्ति के जाने से हम सवको अपार दुःख है। जाना सबको है—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः, ध्रुवं जन्म मृतस्य च। यह शरीर छोड़ना पड़ता है जैसे वस्त्र बदलते हैं परन्तु आत्मा अमर है। प्रशान्त जी अमर हैं, अपने नाम से, अपने काम से। शिक्षण संस्थाओं में, धार्मिक संस्थाओं में, आर्यसमाज में, अनेक स्थानों में हम मिलते हैं। अनेक बार मिले, प्यार से मिले, उनसे मैं बड़ा प्रभावित था। उनकी योग्यता, क्षमता विशेषताएँकुछ ऐसी ही थीं, जिनकी अमिट छाप हमारे दिल पर है।

प्रो० बलराज मधोक (सुप्रसिद्ध राजनीतिक चिन्तक)

मुझे उनके साथ अम्बाला सैण्ट्रल जेल में नजरबन्दी के रूप में एक साथ रहने का मौका मिला। मैंने उन्हें वहां बहुत निकट से देखा। वहां वे नित्यप्रति यज्ञ करते थे और इस प्रकार का वैदिक जीवन वह व्यतीत करेत थे। काश! हममें से कोई कर सके। ऐसा व्यक्ति जिसके जीवन में, व्यवहार में, चिन्तन में, इतना तालमेल था और जो महर्षि दयानन्द के विचारों से इतने प्रतिबद्ध थे, ऐसा शायद जीवन में मैंन कोई नहीं देखा।...ऐसे व्यक्ति का अपने बीच में से चले जाना केवल उनके परिवार की ही क्षति नहीं, यह सारे समाज की क्षति है।

श्री मनोहर विद्यालंकार (वेद मर्मज्ञ)

प्रशान्त जी का जीवन बड़ा विचित्र और विविध क्षेत्रों में काम कर रहा था। आर्यसमाज, में, भाजपा में, गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों के केन्द्र बिन्दु के रूप में, हिन्दी साहित्य सभा में, सब जगह उनका नाम सुनाई देता था। उनके जाने से हरेक आदमी अपने दुःख की वजह से दुःखी है ही लेकिन उनका जीवन वास्तव में "क्षणम् प्रज्ज्वलितम् श्रेयः न धूमायितं चिरम्" (थोड़ी देर भी यदि कोई प्रज्ज्वलित रहता है, तो वह जीवन बहुत श्रेष्ठ है।

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री

जुलूस निकला, जयकारे लगे, विदा देने वालों में मारीशस के केवल चन्द व्यक्ति होते परन्तु इस कन्धों वाली यात्रा पर, विदा देने अनगिनत जनमानस थे।...स्त्री और पुरुष, लेखक व वक्ता, साहित्यकार तथा प्रोफेसर आदि से यात्रा विलक्षण थीं—यात्रा का संस्कार भी एक

पण्डित ने नहीं, पन्द्रह पण्डित विद्वानों के द्वारा शुभ मुहूर्त में विदाई, वेद मन्त्रोच्चार के साथ अग्नि की लपटों में स्वर्गीय यात्रा, या यूं कहें कि अन्तिम यात्रा बनी डॉ० प्रशान्त जी की। धन्य हैं, आप ! क्या सोच रहे थे क्या हुआ जीवन का कला समापन।

गुरुकुल से स्नातक पद की दीक्षा ली आचार्य से और एक आश्रम से द्वितीय आश्रम में आने के लिए भी दूसरी दीक्षा लेनी थी तब वस्तुतः दीक्षा मिली और यह दीक्षा जीवन की एकांगी नहीं सर्वांगीण थी जिन्होंने प्रशान्त जी का साथ विधि-विधान के साथ निभाया।

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार लेखक वक्ता, पत्रकार, एक सफल शिक्षक के रूप में दिल्ली में उभरे। महानगर पार्षद भी रहे। आगे भी कुछ बनते पर समय की गति देखिये—

नोन्मीलिने नयनयोर्नहि किञ्चिदस्ति

सारे वैभव रहे—पर आँख बन्द होने के बाद कुछ नहीं रहा।

श्री विद्यासागर विद्यालंकार (संपादक प्रकर पत्रिका दिल्ली)

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार—दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन, विविध सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों से सम्बद्ध, साहित्यिक एवं भाषिक प्रवृत्तियों में संलग्न, अनेक कृतियों के यशस्वी रचयिता, डॉ० प्रशान्त समीक्षक वर्ग के सदस्य होने के कारण उनका सहयोग सदा उपलब्ध रहता था। अपेक्षाकृत कम आयु में बिछुड़ने का हार्दिक दुःख है। 'प्रकर' की उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि।

श्री पुरुषोत्तम आर्य (प्रतापगढ़, उ० प्र०)

डॉ० साहब महर्षि के भक्त थे, उन्हीं की प्रेरणा स्वरूप वे सच्चे आर्य पुरुष थे। बुद्धिजीवी सम्मेलन में मैं उनसे मिला। वे आर्यों को एक मंच पर देखना चाहते थे जिससे कि आर्य राष्ट्र का स्वप्न जल्दी पूरा हो सके। इस महानतम कार्य में उन्होंने आहुति डाली। देश उनका ऋणी रहेगा। उनका नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्णांकित रहेगा।

श्री बलभद्र भारती, संघड़ विद्यासभा ट्रस्ट, जयपुर
(भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल काँगड़ी)

मुझे जून १९८६ का वह दिन याद है जब गांधी इन एक्शन—की शान्ति पद यात्रा में यूरोप में एल्पस पर्वत माउण्ट रोजा (इटली की सर्वोच्च हिमाच्छादित चोटी) पर शान्ति यज्ञ किया गया था। शान्ति की प्रार्थना की गयी थी। पश्चिमी यूरोप में तो शान्ति हो गई लगती है। बरलिन की दीवार टूट गई है—लेकिन भारत में अभी बहुत करना बाकी है। तुम्हारे जैसे वीर पराक्रमी सपूतों की भारत को बहुत जरूरत है—अच्छा ! जहाँ रहो शान्त रहो—प्रार्थना है कि यहां तुम्हारे जैसे एक से अनेक हों।

श्री विद्यावाचस्पति द्विवेदी सत्यदेव शर्मा (चम्पारण)

डॉ० साहब हंसते हुए जीवन जीते रहे और हंसते हुए अपने प्रभु के अन्तिम प्रसाद 'मृत्यु' को स्वीकारते चले गए। दीपमालिका के दिन अपनी मृत्यु का वरण सहर्ष करते हुए ऋषिवर

ने कहा था—'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।' अखण्ड विश्वास है, निष्काम आस्था है। डॉ० साहब ने भी अपनी मृत्यु का प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन करते हुए वाचा नहीं तो मनसा अवश्य ही कहा होगा।

स्वदेश, स्वभाषा, स्वसंस्कृति और राष्ट्रीयता के अमर अप्रतिम पुजारी, संस्कृत साहित्य और वैदिक वाङ्मय के धुरन्धरधुरीन विद्वान्, आदर्श प्राध्यापक, महर्षि दयानन्द के अद्वितीय भक्त, आर्यसमाज के प्रति समर्पित यह महापुरुष हिन्दी का अनन्य पुजारी, समर्पित सेवक मारीशस जाकर अपनी इच्छा पूर्ण करना चाह रहा था। सर्वशक्तिमान ने उसकी हृदयगति रोककर अपनी बलवती इच्छा पूर्ण कर ली। मैं अपने तथा परिवार के सदस्यों के श्रद्धा-सुमन सादर समर्पित करता हूं।

श्रीमती कृष्णा मेहता (अध्यक्ष महिला मोर्चा भा.ज.पा. सदर जिला)

वे एक सच्चे मित्र और गुरु भाई थे। जब कभी मैं अधीर हो उठती थी तो मैं उन्हीं की प्रेरणा से समाधान की ओर बढ़तीं। मुझे ऐसा लगता है कि प्रशान्त जी गये नहीं, वे अमर हैं। हम सब लोगों के साथ हैं। उनके मार्ग-दर्शन के जो शब्द हैं वे हमारे साथ हैं। हम उन्हीं के बतांये हुए मार्ग पर चलेंगे।

डॉ० रानी भसीन (उपाध्यक्ष महिला मोर्चा भा.ज.पा. दिल्ली प्रदेश)

वे हमारे सहयोगी थे, भाई थे, शब्दों में उनकी विशेषताओं का वर्णन नहीं किया जा सकता।

प्रो० विजयकुमार मल्होत्रा (भारतीय जनता पार्टी के नेता)

डॉ. प्रशान्त वेदालंकार अप्रतिम विद्वान्, सच्चरित्र, श्रेष्ठ वक्ता थे और सबसे बढ़कर एक अच्छे मित्र और इन्सान थे। वर्षों तक जिन लोगों ने उनके साथ काम किया वे उनके गुणों से अच्छी तरह परिचित हैं। १९ महीने जेल में मुझे उनके साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ था। इतना विद्वान् व्यक्ति, प्रत्येक विषय में उनकी जानकारी, उनका अध्ययन, उनका विवेचन, शायद ही अन्य व्यक्ति का हो। अनेक पुस्तकें भी उन्होंने लिखीं, अत्यन्त यश भी उन्होंने प्राप्त किया और राजनीति में रहते हुए जल में कमल के समान वह निष्कलंक रहे। ऐसे व्यक्ति का जाना निश्चित रूप से हमारे दल की क्षति है। आर्य समाज ने एक प्रबुद्ध शोधकर्त्ता खोया और इससे भी ऊपर समाज में विद्वानों की एक अपूरणीय हानि है।

श्री ओमप्रकाश जी कोहली (अध्यक्ष, भा. ज. पा. दिल्ली प्रदेश)

एक सुसंस्कृत व्यक्ति के जितने भी लक्षण कहे जा सकते हैं, वे सब प्रशान्त जी में थे। किसी ने कल्चर्ड व्यक्ति की एक पहचान बताई है वह ज्ञानशील व विचारशील होता है, उसमें विनम्रता और मधुरता होती है। इन दो शब्दों का जोड़ कल्चर्ड व्यक्ति की पहचान है। ज्ञान की दृष्टि से विचार करें, तो बेहद अध्यवसायी, अध्ययनशील प्रकृति के चीजों की तह तक जाने वाले, मूल तक जाने की ऐसी उनकी प्रवृत्ति थी। बहुत पढ़े हुए थे और मिठास की तो यह बात

है वे किसी को नाराज नहीं कर सकते थे। ऐसा उनका स्वभाव था। जिससे वे सहमत नहीं होते थे उसके प्रति अपनी असहमति प्रकट करते हुआ भी इस बात का ध्यान रखते थे कि वह व्यक्ति कम से कम अप्रसन्न हो।

बहुत अच्छा इन्सान हमने खो दिया है। उनके अनेक पहलु हो सकते हैं लेकिन मनुष्य का सबसे पहला पहलू उसकी मनुष्यता का ही होता है। ऐसा एक अच्छा मनुष्य, मेरा तो सहकर्मी, सहयोगी और अभी भारतीय जनता पार्टी में हमने एक भाजपा विचार मंच नाम से एक्टीविटी शुरू की थी जिसमें विचारशील व्यक्तियों को जोड़ने का काम प्रारम्भ किया था। उसकी जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व जिस ग्रुप को दी गयी थी उसमें भी डॉ० प्रशान्त कुमार जी थे। ऐसी बैठकों में उनके बहुत ही उत्तम योग्य विचार सामने आया करते थे। उनके न रहने से उनकी जो रिक्तता, जो अभाव पैदा हुआ है उसे भरपाना सम्भव नहीं होगा।

श्री मेवाराम आर्य (विधायक भाजपा)

भारतीय जनता पार्टी में जो कार्यकर्ता स्पष्टवादिता के लिए विख्यात हैं, उनमें डॉ० प्रशान्त वेदालंकार थे। हमारे संगठन में जब भी वैचारिक मंथन हुआ, तो उन्होंने सटीक बात कही। उस समय उनकी बात कुछ अटपटी भी लगी, बाद में उनकी बात का चिन्तन हुआ, मन्थन हुआ और वह ठीक पाई गई। वे एक प्रखर विद्वान्, ओजस्वी वक्ता थे। भारतीय जनता पार्टी के परिवार को उनके निधन से जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। ऐसे प्रशस्त वक्ता के जाने से आर्य जगत् को जो क्षति हुई वह अपूरणीय है।

प्रो० पी० के० चांदला (विधायक भाजपा)

डॉ० प्रशान्त मेरे बड़े भाई के समान थे। वे सरल, मृदुभाषी, विचारशील थे। उन्होंने राजनीति में रहते हुए भी मूल्यों पर आधारित जीवन बिताया। भास्तीय जनता पार्टी की बैठकों में अनेकानेक मौके ऐसे आए, जहाँ विचार मन्थन का समय आया, उन्होंने निर्भीक विचार व्यक्त किए। काफी लोगों को उनसे नाराजगी भी होती रही। लेकिन वे सही बात कहने से कभी चूकते नहीं थे। ऐसे व्यक्ति का अकस्मात चले जाना, अत्यन्त दुःखद है। उन्हें काफी काम करना था। उनके निधन से भारतीय जनता पार्टी को भारी क्षति पहुंची है।

आचार्य गिरिराज किशोर (महामंत्री, विश्व हिन्दू परिषद्)

विचार भी नहीं किया था कि कभी प्रशान्तजी को मुझे श्रद्धांजलि देने का अवसर आएगा। बहुमुखी प्रतिभा से धनी, हरेक क्षेत्र के अग्रणी, प्रत्येक क्षेत्र में अनेक मित्रों को अपने स्मरण में विह्वल करते हुए वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। सच बात यह है कि जिनकी आवश्यकता यहां होती है, भगवान् को भी उनकी आवश्यकता रहती है। वह स्वयं मोक्षगामी हुए क्योंकि वे अनेक प्रकार से, हरेक कार्य में दत्तचित्त रहते हुए भी किसी कार्य में बँधते नहीं थे।

श्री सत्यव्रत सामवेदी (जयपुर)

गोस्वामी तुलसीदास जी के किसी मित्र का निधन हो जाता था तो वे बहुत दुःखी होते थे। एक बार वे इतने दुःखी हुए कि उन्होंने कहा कि संतों और असंतों में कोई अन्तर नहीं है।

मैं दोनों में फर्क नहीं मानता। संत असंत में कोई अन्तर नहीं है? यह क्या कह रहे हैं। तो उन्होंने जो श्रद्धांजलि अर्पित की, वह विश्व साहित्य की अमूल्य कृति है। बन्दौ सन्त असज्जन चरना। दुःखप्रद उभय बीच कुछ बरना। बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुःख दारुण देहीं। मैं दोनों की वन्दना करता हूं संत और असंत की। दोनों ही दुःखप्रद हैं। दुःख देते हैं। एक बिछुड़ते हुए दुःख देता है और एक मिलते हुए दुःख देता है। हमने अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि दी, उन्होंने बिछुड़कर के हमें दुःख ही दिया।...उनकी हर सांस देश, समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित थी।

डॉ० रामनाथ वेदालंकार

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार बुद्धिजीवी चिन्तक, कुशल वक्ता, सिद्धहस्त लेखक व कर्त्तव्य परायण अध्यापक थे। उनका कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक होता जा रहा था। उन्हें दयानन्द और आर्यसमाज की चिन्ता थी, देश की चिन्ता भी थी। जैसा वे सोचते थे, वैसा कर पाने की धुन उन्हें सदा लगी रहती थी।...अभी उनसे बहुत आशाएँ थीं। अभी तो वह फूल, सौन्दर्य और सुगन्ध बिखेर रहा था अनायास ही माली ने उसे तोड़ लिया।

श्री सतीशचन्द्र कमलाकर (विदेश यात्रा के एक सहयोगी)

मैंने उनमें एक आदर्श व्यक्ति के गुण पाए। बड़ा सन्तुलित व्यक्तित्व था उनका। हमने एक हिन्दी सेवी, वेदों का ज्ञाता और पथ-प्रदर्शक खो दिया, उनके निधन से जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकेगी।

श्री गोकुल चंद जाँगीड़ (अध्यक्ष, हंसराज कॉलेज प्राध्यापक संघ)

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार अत्यंत सरल तथा सहृदय व्यक्ति थे। उनका सिद्धांत रहा जो सोचना, सो करना। तनिक संकेत पर ही वे दूसरों के कष्ट-निवारण की दिशा में सक्रिय हो जाते थे। वे हिन्दी की सेवा को राष्ट्र-सेवा का महत्त्वपूर्ण अंग मानते थे।

डॉ० एन. के. कक्कड़ (अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय संघ)

डॉ० प्रशान्त वेदालंकार एक निष्ठावान शिक्षक थे। विविध सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में व्यस्त रहने के बावजूद वे शिक्षक आंदोलनों में कभी पीछे नहीं रहते थे। शिक्षा और शिक्षण सम्बन्धी अपनी पुस्तकों के द्वारा उन्होंने समाज को नई दृष्टि दी।

डॉ० रवीन्द्र दरगन (अन्तरंग सखा और सहयोगी)

डॉ० प्रशांत वेदालंकार विद्वत्ता, सहृदयता, निश्छलता एवं मैत्री-भाव की दृष्टि से अतुलनीय थे। वे सदैव सबको सहयोग देने के लिए तत्पर रहते थे। प्रखर चिंतक, निर्भीक वक्ता, सिद्ध लेखक एवं जागरूक शिक्षक डॉ० प्रशांत वेदालंकार का जीवन 'चरैवेति-चरैवेति' का जीता-जागता उदाहरण था। वे वास्तव में मानव-रत्न थे।

डॉ० रामप्रकाश (सदस्य विद्वत् परिषद्, राष्ट्रीय सिख संगत)

आर्यकुल-दीपक और गुरुकुल-स्नातक वे,
सदा कटिबद्ध रहे सेवा में समाज की।
सादगी व सौम्यता के अवतार-रूप थे वे,
उन्हें न थी रुचि कभी दिखावे, ठाठ--साज की।
निर्भीक-निर्वैर शिक्षक और साहित्यकार,
चिंता थी सताती मां भारती की लाज की।
बहु भाषा-पंडित, गहन ज्ञान-मंडित वे,
भूलेगी न याद कभी लोक-सिरताज की।

डॉ० देवेन्द्र दीपक (मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी)

प्रशांत जी एक प्रखर और मुखर चिंतक, लेखक और शिक्षक थे। वे सचमुच आर्य थे। भोपाल प्रवास के समय वह अकादमी आए थे और उस समय उन्होंने तकनीकी विषयों को हिन्दी-माध्यम से पढ़ाने के सम्बन्ध में आयोजित एक सेमनिार की जानकारी दी थी।

चतुर्थ विश्व हिन्दी सम्मेलन पर उनके निधन की शोकमयी छाया बराबर छाई रही।

श्रीमती माला मंगरू (मौरिशस)

मेरे पति कुछ मेहमानों को लेकर घर आये। उनमें मैंने भैया जी को नहीं पाया, पूछने पर इन्होंने समाचार सुनाया, मैं स्तब्ध रह गई। अपने आंसू रोके हुए मैंने पति के साथ भारत से आये मेहमानों का सत्कार किया।

विराट् दिव्यकीर्ति

मेरे पिताजी (डॉ० प्रशान्त वेदालंकार) ने जिन आदर्शों को अपनाया, जिस कार्य के लिए वे शहीद हुए, मैं विश्वास करता हूं कि, जीवन पर्यन्त उसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए, उनके मूल विचारों की भावना आत्मा को समझते हुए श्रेष्ठ कार्यों की पूर्ति का प्रयास करूंगा। आप लोगों का आशीर्वाद चाहिए, आप की सहायता चाहिए। जब भी मुझे पिताजी की कमी खलेगी मैं आप लोगों के पास पहुंचूंगा आपसे राय लेने के लिए, दिशा लेने के लिए। आप लोग उनके साथ थे, वे अंशों में विभाजित वे आप में समाहित हैं। उनकी मृत्यु, मेरे लिए पिता की मृत्यु नहीं है, पिता का शोक नगण्य हैं, परन्तु जो सामाजिक नुकसान हुआ है, वह मेरे लिए अधिक है।

—— o ——

निम्नलिखित संस्थाओं की ओर से शोक-प्रस्ताव प्राप्त हुए—

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, वेद प्रतिष्ठान, आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य मॉडल पब्लिक स्कूल तिमारपुर, आर्यसमाज पंजाबी बाग एक्सटेंशन, महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट टंकारा, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली, बिरला आर्य सीनियर सेकेण्डरी स्कूल दिल्ली, आर्य जगत् (साप्ताहिक), आर्य प्रतिनिधि सभी, गुरुद्वारा सिंह सभा, सिंगल स्टोरी विजय नगर, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज तिमारपुर, नागरिक चेतना की प्रमुख समाचार पत्रिका 'समाचार', गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, आर्य राष्ट्रीय मंच, आर्य समाज करोलबाग, माता रामरती सनातन धर्म सरस्वती बाल मन्दिर, महेन्द्रु इन्क्लेव, मालवीय शिक्षा सदन सोनीपत, आर्यसमाज शक्तिनगर, आर्य आदर्श विद्यालय आदर्श नगर, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार, आर्यसमाज हनुमान रोड, प्रान्तीय आर्य महिला सभी दिल्ली, जतोई मित्र मण्डल, आर्यसमाज आदर्श नगर, केन्द्रीय आर्य परिषद्, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, आर्यसमाज, कस्तूरबा नगर, डिफेन्स, कालोनी, तहसील अलीपुर बिरादरी, आर्यसमाज सरस्वती विहार, राष्ट्रीय सिख संगत, नांदेड अधिवेशन स्मारिका, डॉ. नित्यानन्द जी तिवारी, आर्यसमाज बिरला लेन, आर्य अनाथालय दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य दल हरियाणा, वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत, मित्र संगम, पुरानी गुप्ता कालोनी, आर्य कुमार सभा किंग्ज़वे कैम्प, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार संगम, हंसराज कॉलेज स्टाफ एसोसिएशन, श्यामाप्रसाद मुखर्जी कॉलेज स्टाफ एसोसिएशन, दिल्ली विश्वविद्यालय शिक्षक संघ (डूटा), डी० ए० वी० कॉलेज एसोसिएशन, छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभी रांची, आर्यसमाज क्रान्तिकारी युवा संगठन, आर्य युवा विकास परिषद् दिल्ली प्रदेश, राष्ट्रीय हिन्दू मंच दिल्ली, सर्वोदय डिग्री कॉलेज धौली, (मध्यप्रदेश), आर्यसमाज मन्दिर, डॉ० मुखर्जी नगर, हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, विश्व कल्याण महायज्ञ मेरठ, आर्यसमाज अशोक विहार-१, आर्य प्रतिनिधि सभा, बम्बई, वैदिक बालिका सीनियर उ० माध्यमिक विद्यालय, जयपुर, आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली, जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय, तुलसीपुर, वाराणसी, अखिल भारतीय साहित्य परिषद् केन्द्रीय कार्यालय, राष्ट्रीय सिख संगत, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, युवा केन्द्र, फ्रेन्डस एन्क्लेव, नांगलोई।

—— o ——

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम।

—अथर्व.१२.१.४५

(पृथ्वी अलग-अलग भाषा-भाषियों तथा नाना धर्मों वाले लोगां को घर की भांति धारण करती है।)

(१)

एक जगत की धरती माता, सब उसकी सन्तान।
सब उसकी सन्तान ॥
भेदभाव से हम मुख मोड़ें, दुष्कर्मों का मार्ग छोड़ें।
सब राष्ट्रों से नाता जोड़ें, बने गुणों की खान ॥
बने गुणों की खान ॥ एक०
सत्य अहिंसा प्रेम बढ़ायें, देश भक्ति का दीप जलायें।
जन सेवा को धर्म बनाएँ, रहे इसी में ध्यान ॥
रहे इसी में ध्यान ॥ एक०
दुर्जन को भी करदे सज्जन, मानवतामय हो यह जीवन।
सदा नीति परवारें तन-मन बढ़े हमारी शान ॥
बढ़े हमारी शान ॥ एक०
बुद्ध मोहम्मद ख्रिस्त महात्मा, दया रूपी थी सबकी आत्मा।
प्रगति न्याय के वह परमात्मा जग में उनका मान ॥
जग में उनका मान ॥ एक०

—बसन्त तुलजापुरकर

(२)

विनती यह है नाथ हमारी, अन्धियारी मिट जावे सारी।
स्नेहभरी अतिशय उजियारी, राह दिखावे ज्योति तुम्हारी ॥
एक मन्त्र में दीक्षित होवें भेद सभी अब देहि बिसारी।
बनें गुणी जन पद अनुगामी, कर पकरैं जिन लखैं दुखारी ॥
संगति हो सच्ची मति हो, कर्म होय सब जन उपकारी।
सरस्वती की नव जीवन से खिली रहे यह नव फुलवारी ॥
तेज दण्ड में अजय हमारे सदा रहे कल्मषसंहारी।
सफल काम हों तब करुणा से ब्रह्मचर्य का व्रत अतिभारी ॥
तन मन धन सुख सब बिसरावें जन्मभूमि सुख सजै हमारी।
दुःख हो सुख हो तुझे न भूलें, तू वत्सल भक्तन भयहारी ॥

—बुद्धदेव विद्यालंकार

जीवन-रेखा

जन्म	२१-०९-१९३७ (सीतपुर, मुल्तान—अब पाकिस्तान में)
विवाह	विवाहित, धर्मपत्नी डॉ० सरोज दीक्षा, रीडर श्यामाप्रसादमुखर्जी महिला महाविद्यालय, दिल्ली, पुत्र : विराट दिव्यकीर्ति, पुत्री : अरुपी दिव्यकीर्ति।
शिक्षा	(१) वेदालंकार (विशेष) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, १९५८, (२) एम. ए. (हिन्दी) दिल्ली विश्वविद्यालय पी-एच. डी., दिल्ली विश्वविद्यालय।
अनुभव	१३ जनवरी १९६१ से दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालय में प्राध्यापक व रीडर, साथ ही शोध निर्देशक भी।
शिक्षा संस्थाओं से सम्पर्क	(१) १९५९ से राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक साहित्यिक शैक्षणिक, सामाजिक व सांस्कृतिक संस्थाओं में सक्रिय। (२) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अनेक वर्षों तक एकेडेमिक कौंसिल व सीनेट के सदस्य।
संपादकीय अनुभव	पत्रकारिता व संपादन का व्यापक अनुभव, विभिन्न प्रमुख समाचारपत्रों में लगभग २०० विशिष्ट शोध-कृतियां प्रकाशित।
प्रकाशित पुस्तकें	(१) वैदिक साहित्य में नारी, १९६४ (२) रसाभास, १९७१ (शोध प्रबन्ध) (३) राज्यव्यवस्था (वैदिक साहित्य के आधार पर) १९७५ (४) वैदिक समाज व्यवस्था, १९७८ (५) धर्म का स्वरूप, १९८१ (६) शिक्षा व भाषा नीति, १९८२, (७) जीवन के पांच स्तम्भ, १९८३ (८) स्मृति और विचार (संपादन) (९) संगत सन्देश (संपादन) (१०) विश्वविद्यालयों में हिन्दी प्रयोग : समस्याएँ और समाधान १९९१ (११) भारत में शिक्षा-अशिक्षा : समस्या क्रियान्वयन की (१२) मुल्तानी और हिन्दी का तुलनात्मक अध्ययन (१३) सामयिक लेखों के विवरण : (क) साहित्यिक (ख) भाषा (ग) भारतीय संस्कृति व वेद (घ) शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ (१४) आपात्काल के उन्नीस महीने (जेल डायरी) १९७८।
अप्रकशित कृतियां	(१) हिन्दी रीतिकालीन साहित्य : पुनर्विवेचन (२) हिन्दी साहित्य की पूर्व पीठिका (३) हिन्दू धर्म बनाम मानव धर्म (४) वैदिक समाज और संस्कृति (५) हिन्दी का आदिकालीन साहित्य (६) भारतीय काव्यशास्त्र का विश्वकोश।

विचार गोष्ठियों में पढ़े गए शोध-पत्र विश्व	(१) हिन्दी अनुसंधान परिषद् (दिल्ली विश्वविद्यालय (१९६४) (२) भारतीय साहित्य परिषद् (दिल्ली) (३) प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन (नागपुर), तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन (दिल्ली) में भाग लिया, (४) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित अनेक विचारगोष्ठियों में अनेक शोध-लेख पढ़े (५) भारतीय साहित्य परिषद् द्वारा आयोजित सम्मेलनों में : औरंगाबाद (१९८४) लखनऊ (१९८८) में शोध लेख पढ़ा (६) अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर (१९८९) में शोध-लेख पढ़ा (७) नागरी संगम (दिल्ली) तथा भारत भवन (भोपाल) की संगोष्ठियों में निबन्ध वाचन। (८) भारतीय साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित मैथिलीशरण गुप्त (कलकत्ता) व जयशंकर प्रसाद (दिल्ली) पर आयोजित संगोष्ठियों में भाग लिया (९) दिल्ली में प्रवासी भारतीयों की समस्याओं पर तथा मारीशस में अप्रवासी भारतीयों के दासता मुक्ति के १५० वें समारोह में भाग लिया (१०) १९८६ में 'गांधी इन एक्शन (इंटरनेशनल) संस्था द्वारा आयोजित इटली, फ्रांस और स्विटज़रलैण्ड में गांधीवाद पर विचार व्यक्त किये तथा इंग्लैण्ड में वैदिक संस्कृति और धर्म पर।'
सामाजिक गतिविधियां	(१) राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित मुरैना, गंगटोक, मैसूर, आसाम, अहमदाबाद आदि के शिविर व पदयात्राएँ। (२) १९८६ में इटली, फ्रांस और स्विटज़रलैण्ड में 'गांधी इन एक्शन (अन्तर्राष्ट्रीय संस्था द्वारा आयोजित) शान्ति पद-यात्रा। (३) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद् की कार्यकारिणि का सदस्य- (४) नागरिक परिषद् दिल्ली का कार्यकारी के सदस्य (५) विश्व विद्यालय हिन्दी परिषद् के महासचिव (६) अखिल भारतीय साहित्य परिषद् की दिल्ली प्रदेश शाखा के उपाध्यक्ष।
विदेश यात्राएं	नेपाल, पाकिस्तान, मारीशस, भूटान, थाईलैण्ड, सिंगापुर, इण्डोनेशिया व अनेक यूरोपीय देशों की यात्राएँ।
महाप्रयाण	०१-१२-१९९३, दिल्ली

* * * *